शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय

राजनांदगांव(छ.ग.)

विभागीय प्रतिवेदन

2021–2022

संस्कृत विभाग

विभागाध्यक्ष

डॉ.दिव्या देशपांडे

प्राचार्य

डॉ. के. एल. टांडेकर

संस्कृत सप्ताह कार्यक्रम

दिनांक 19.08.2021 – 25.08.2021

महाविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा दिनांक 19.08.2021 – 25.08.2021 तक संस्कृत – सप्ताह का आयोजन किया गया। दिनांक 19.08.2021 को संस्कृत सप्ताह का उद्घाटन online हुआ। विभाग के विद्यार्थियों ने online माध्यम से गूगल मीट द्वारा कार्यक्रम आयोजित कर देवपूजन, स्तोत्रपाठ तथा वैदिकमन्त्र पाठ किया। दिनांक 20.08.2021 को online संस्कृत श्लोक पाठ प्रतियोगिता आयोजित की गई। दिनांक 21.08.2018 को ग्रंथसूत्र बंधन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दिन विभाग के विद्यार्थियों ने किसी एक संस्कृत ग्रंथ को रक्षा सूत्र बांधकर चित्र प्रेषित किए। दिनांक 23.08.2021 संस्कृत गीत गायन प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में विभाग के प्रथम एवं तृतीय सेमेस्टर के विद्यार्थियों ने संस्कृत गीतों का गायन किया। दिनांक 24.08.2021 को संस्कृत निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 'संस्कृत भाषायाः महत्त्वम्' विषय पर निबंध लिखे गये।दिनांक 25.08.2021 संस्कृत प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई।

कार्यक्रम का समापन दिनांक 26.08.2021 को किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ सरस्वती पूजन एवं स्वस्ति वाचन से हुआ। विभागाध्यक्ष डॉ. दिव्या देशपाण्डे ने संस्कृत सप्ताह मनाने का उद्देश्य बताते हुये सप्ताह भर के कार्यक्रमों से संबंधित प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। डॉ. बी.एन. मेश्राम जी ने संस्कृत भाषा के महत्व, भविष्य में संस्कृत की उन्नति हतु किये जा रहे प्रयासों पर प्रकाश डाला। अन्त में संस्कृत सप्ताह के अंतर्गत होने वाली प्रतियोगिताओं के पुरस्कार वितरित किये गये। कार्यक्रम का संचालन डॉ. ललित प्रधान आर्य ने किया।

कार्यक्रमाः

वाल्मिकी जयंती

दिनांक 21.10.2021

दिनांक **21.10.2021**को संस्कृत विभाग में वाल्मिकी जयंती पर कार्यक्रम आयोजित किया गया । इस अवसर पर विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. दिव्या देशपाण्डे,सहायक प्राध्यापक डॉ . ललित प्रधान आर्य तथा अतिथि व्याख्याता स्वामी संवर्धक शर्मा तथा स्नातक एवं स्नातकोत्तर पूर्वार्द्ध तथा उत्तरार्द्ध के छात्र – छात्रायें उपस्थित थे । कार्यक्रम का प्रारंभ स्वस्ति वाचन एवं सरस्वती पूजन के साथ हुआ । सहायक प्राध्यापक डॉ . ललित प्रधान आर्य ने वाल्मिकी रामायण पर प्रकाश डालते हुये मूल रामायण के प्रमुख श्लोकों का वाचन एवं व्याख्या प्रस्तुत की । विभागाध्यक्ष डॉ. दिव्या देशपाण्डे ने लौकिक साहित्य के उदय, वाल्मिकी की आदि कवि के रूप में प्रसिद्धि उनकी काव्यकला तथा रामायण की उपजीव्यता पर प्रकाश डाला । उन्होने परवर्ती ग्रंथों पर रामायण के प्रभाव तथा रामायण कालीन संस्कृति पर भी विस्तृत प्रकाश डाला । उन्होने बताया कि वाल्मिकी रस सिद्ध कवि कहे जाते हैं तथा उनकी भाषा शैली सरस एवं सरल है । कालिदास, अश्वघोष आदि कवियों ने वाल्मिकी के मार्ग का अनुसरण कर ख्याति प्राप्त की । सम्पूर्ण कार्यक्रम का मंचसंचालन एवं आभार प्रदर्शन अतिथि व्याख्याता स्वामी संवर्धक शर्मा ने किया। कार्यक्रम संस्कृत भाषा में संचालित किया गया ।

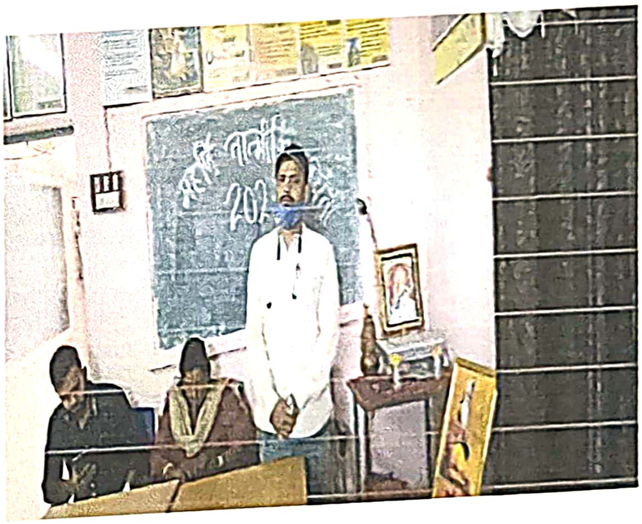

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय ,राजनांदगांव

संस्कृत विभाग

संस्कृतसाहित्यपरिषद् का गठन

(2021-22)

आज दिनांक 14/12/2021 को महाविद्यालय के संस्कृत विभाग में प्राचार्य डॉ. के.एल.टांडेकर जी के मार्गदर्शन में प्रावीण्यता के आधार पर संस्कृतसाहित्यपरिषद् का गठन निम्नानुसार किया गया है।

अध्यक्ष –कु.अंगिता

उपाध्यक्ष – कु.अंकिता

सचिव- कु.दुलारी

सहसचिव – कु. युनेश्वरी

कार्यकारी सदस्य :- स्नातकोत्तर स्तर संस्कृत तथा स्नातक स्तर संस्कृत के सभी छात्र संस्कृतसाहित्यपरिषद् के सदस्य होंगें।

विभागाध्यक्ष डॉ. दिव्या देशपाण्डे तथा सहायक प्राध्यापक डॉ. ललित प्रधान आर्य एवं अतिथि व्याख्याता श्री स्वामी संवर्धक शर्मा की उपस्थिति में प्राचार्य महोदय ने संस्कृतसाहित्यपरिषद् का उद्घाटन किया। इस अवसर पर प्राचार्य जी ने पदाधिकारियों को शुभकामनायें दी तथा उन्हे उनके दायित्व बोध से अवगत कराया।

इसी अवसर पर गीता जयंती का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ हुआ। प्राचार्य डॉ. के. एल. टांडेकर ने गीता पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए बताया कि कालजयी कृति है। विभागाध्यक्ष डॉ. दिव्या देशपाण्डे तथा सहायक प्राध्यापक डॉ. ललित प्रधान आर्य ने गीता के विषय में विद्यार्थियों को विशेष व्याख्यान दिया।

शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय के संस्कृत विभाग में भूतपूर्व छात्र सम्मेलन आयोजित

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव के प्राचार्य डॉ.के.एल. टांडेकर के निर्देशानुसार दिनांक 28/12/2021 को संस्कृत विभाग में विभागाध्यक्ष डॉ. दिव्या देशपांडे एवं विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. ललित प्रधान आर्य की उपस्थिति में भूतपूर्व छात्र सम्मेलन आयोजित किया गया। इस अवसर पर विभाग के भूतपूर्व छात्र–छात्रा उपस्थित रहे। कार्यक्रम का प्रारंभ वैदिक मंत्रोच्चारण, दीप प्रज्ज्वलन एवं सरस्वती वंदना के साथ हुआ। विभागाध्यक्ष डॉ. दिव्या देशपाण्डे ने सम्मेलन में उपस्थित सभी भूतपूर्व छात्र–छात्राओ को वर्तमान में विभाग में अध्ययन का स्तर, महाविद्यालय में विद्यार्थियों के लिये उपलब्ध सुविधाओं आदि विषयों पर जानकारी दी। भूतपूर्व छात्रो द्वारा भी महाविद्यालय एवं विभाग की उत्तरोत्तर प्रगति पर संतुष्टि व्यक्त की गयी । उन्होने अपने बहुमूल्य सझाव भी प्रदान किये। भूतपूर्व छात्रो द्वारा फीडबैक प्रपत्र भरकर फीडबैक प्रदान किया गया।

संस्कृत विभाग में अंतर्विभागीय व्याख्यान का आयोजन

1 **डॉ. हरनाम सिंह अलरेजा** -.महाविद्यालय के प्राचार्य आदरणीय के.एल.टांडेकर जी के मार्गदर्शन में संस्कृत विभाग में दिनांक 22/12/2021 को अंतर्विभागीय व्याख्यान आयोजित किया गया। जिसमें दर्शनशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष आदरणीय डॉ. हरनाम सिंह अलरेजा जी ने **भारतीय नास्तिक दर्शन** इस विषय पर अपना व्याख्यान दिया।आदरणीय अलरेजा सर ने भारतीय नास्तिक दर्शनों का स्वरूप,साहित्य,प्रमुख सिद्धान्त ,समीक्षा इन सभी बिन्दुओं पर अत्यंत रुचिकर शैली में गंभीर प्रतिपादन किया।इस कार्यक्रम का संचालन संस्कृत विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ दिव्या देशपाण्डे ने किया तथा आभार प्रदर्शन डॉ ललित प्रधान आर्य द्वारा किया गया।इस अवसर पर विभाग के स्नातक एवं स्नातकोत्तर के विद्यार्थी उपस्थित थे।

2. **डॉ. अनिल मिश्रा** -.महाविद्यालय के प्राचार्य आदरणीय के.एल.टांडेकर जी के मार्गदर्शन में संस्कृत विभाग में में दिनांक 03/02/2022 को अंतर्विभागीय व्याख्यान आयोजित किया गया। जिसमें भूगोल विभाग के सहायक प्राध्यापक आदरणीय अनिल मिश्रा जी **छत्तीसगढ़ के प्रमुख धार्मिक स्थल** इस विषय पर अपना व्याख्यान दिया।यह कार्यक्रम google meet के माध्यम से आयोजित किया गया।कार्यक्रम में आदरणीय प्राचार्य महोदय द्वारा विभाग को सतत इस तरह के आयोजनों हेतु प्रेरित किया गया एवं विद्यार्थियों को आशीर्वचन प्रदान किये गए।आदरणीय मिश्रा सर ने कथानक ,तथ्यों और महत्त्व प्रतिपादन सभी दृष्टियों से अत्यंत रुचिकर शैली में सभी पंथों के धार्मिक स्थलों का गंभीर प्रतिपादन किया।इस कार्यक्रम का संचालन संस्कृत विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ दिव्या देशपाण्डे ने किया तथा आभार प्रदर्शन डॉ ललित प्रधान आर्य द्वारा किया गया।इस अवसर पर विभाग के स्नातक एवं स्नातकोत्तर के विद्यार्थी उपस्थित थे।

3.डॉ. अनिता साहा- महाविद्यालय के प्राचार्य आदरणीय के.एल.टांडेकर जी के मार्गदर्शन में संस्कृत विभाग द्वारा में दिनांक 12/02/2022 को अंतर्विभागीय व्याख्यान आयोजित किया गया,जिसमें अंग्रेजी विभाग की सहायक प्राध्यापक डॉ. अनिता साहा द्वारा **Free Online Courses with Certificates by Government of India** इस विषय पर अपना व्याख्यान दिया गया।यह कार्यक्रम google meet के माध्यम से आयोजित किया गया। कार्यक्रम में प्राचार्य महोदय द्वारा कहा गया किविभाग को सतत इस तरह के आयोजन किये जाने चाहिए जिनसे विद्यार्थी लाभान्वित हों ।डॉ अनिता साहा द्वारा न केवल *Swayam* तथा अन्य पाठ्यक्रमों के विषय में अपितु संस्कृत विषय हेतु भी राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय विश्विद्यालयों में चलाए जा रहे online पाठ्यक्रमों कीसविस्तृत जानकारी दी गयी।इस कार्यक्रम का संचालन संस्कृत विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ दिव्या देशपाण्डे ने किया तथा आभार प्रदर्शन डॉ ललित प्रधान आर्य द्वारा किया गया।इस अवसर पर विभाग के अतिथि व्याख्याता डॉ महेंद्र नगपुरे एवं स्नातक एवं स्नातकोत्तर के विद्यार्थी उपस्थित थे।

4.श्री अमितेश सोनकर - महाविद्यालय के प्राचार्य आदरणीय के.एल.टांडेकर जी के मार्गदर्शन में संस्कृत विभाग द्वारा में दिनांक 15/02/2022 को अंतर्विभागीय व्याख्यान आयोजित किया गया,जिसमें पत्रकारिता विभाग के अतिथि प्राध्यापक आदरणीय अमितेश सोनकर जी ने **सम्प्रेषण कला एवं प्रिंट मीडिया की भूमिका** इस विषय पर अपना व्याख्यान दिया।आदरणीय सोनकर सर के द्वारा सम्प्रेषण कला की महत्ता,पत्रकार के गुण एवं संस्कृत में पत्रकारिता के अवसर इत्यादि द्वारा विषयों पर सविस्तृत जानकारी दी गयी। कार्यक्रम का प्रारंभ वैदिक मंगलाचरण से हुआ। इस कार्यक्रम का संचालन संस्कृत विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ दिव्या देशपाण्डे ने किया तथा आभार प्रदर्शन डॉ ललित प्रधान आर्य द्वारा किया गया।इस अवसर पर विभाग के अतिथि व्याख्याता डॉ महेंद्र नगपुरे एवं स्नातक एवं स्नातकोत्तर के विद्यार्थी उपस्थित थे।

5.डॉ. शुभेन्द्र जेनामनी - महाविद्यालय के प्राचार्य आदरणीय के.एल.टांडेकर जी के मार्गदर्शन में संस्कृत विभाग द्वारा आज दिनांक 17/2/2022 अंतर्विभागीय व्याख्यान आयोजित किया गया,जिसमें भूगोल विभाग के सहायक प्राध्यापक आदरणीय शुभेन्द्र जेनामनी ने **मानव भूगोल एवं आध्यात्मिक भूगोल** इस विषय पर अपना व्याख्यान दिया। कार्यक्रम का प्रारंभ वैदिक मंगलाचरण से हुआ।आदरणीय जेनामनी सर द्वारा भारत के आध्यात्मिक क्षेत्रों,उन क्षेत्रों की भौगोलिक परिस्थितियों के विषय में सविस्तृत जानकारी दी गयी।इस कार्यक्रम का संचालन संस्कृत विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ दिव्या देशपाण्डे ने किया तथा आभार प्रदर्शन डॉ ललित प्रधान आर्य द्वारा किया गया।इस अवसर पर विभाग के अतिथि व्याख्याता डॉ महेंद्र नगपुरे एवं स्नातक एवं स्नातकोत्तर के विद्यार्थी उपस्थित थे।

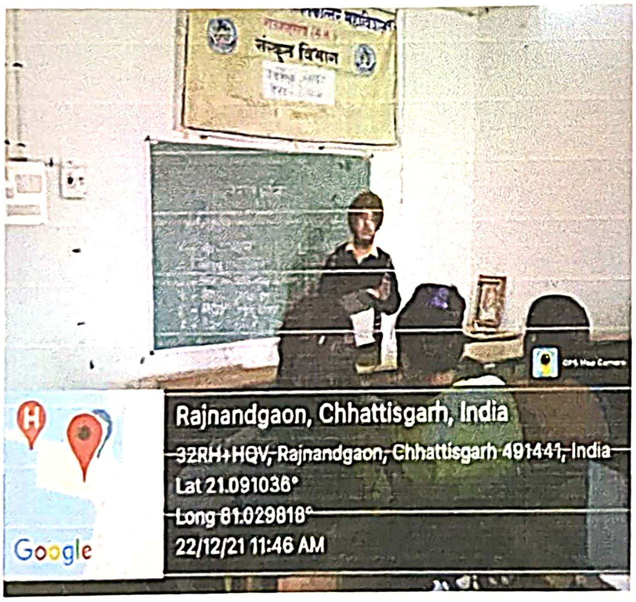

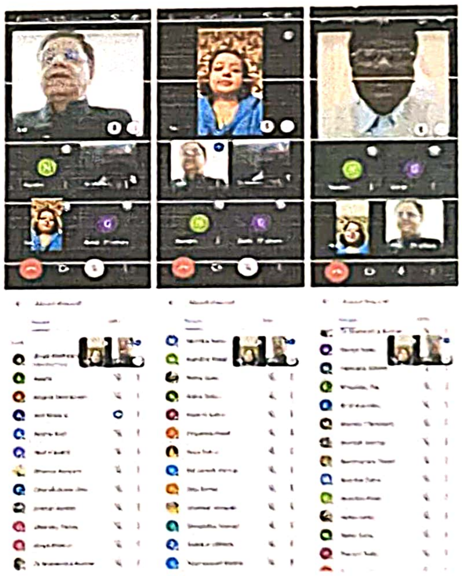

Dr. Anita
Atul
Anshi
13 others

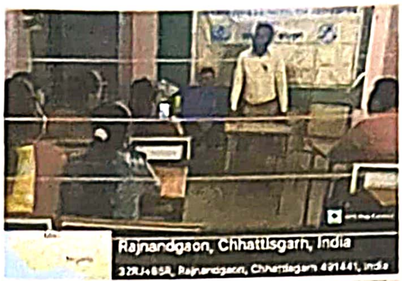
Rajnandgaon, Chhattisgarh, India
32RJ+85R, Rajnandgaon, Chhattisgarh 491441, India

Rajnandgaon, Chhattisgarh, India
32RJ+85R, Rajnandgaon, Chhattisgarh 491441, India

Rajnandgaon, Chhattisgarh, India
32RJ+85R, Rajnandgaon, Chhattisgarh 491441, India
Lat 21.090725°

Rajnandgaon, Chhattisgarh, India
32RJ+85R, Rajnandgaon, Chhattisgarh 491441, India
Lat 21.090732°

Rajnandgaon, Chhattisgarh, India
32RJ+85R, Rajnandgaon, Chhattisgarh 491441, India
Lat 21.090864°
Long 81.030091°

वसंत पंचमी

05/02/2022

दिनांक 05/02/2022 को प्राचार्य डॉ. के एल टांडेकर जी के मार्गदर्शन में संस्कृत विभाग द्वारा वसंत पंचमी कार्यक्रम आयोजित किया गया। **इस कार्यक्रम में संस्कृत विभाग में मंत्रोच्चारण के माध्यम से विधिवत सरस्वती पूजन संपादित किया गया।** प्राचार्य डॉ. के. एल. टांडेकर जी ने विद्या के महत्त्व एवं उसकी प्राप्ति हेतु अथक प्रयत्न कर किस प्रकार प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सकते हैं इस विषय में बताया। इस अवसर पर संस्कृत विभाग द्वारा सरस्वती पूजन छाया चित्र प्रतियोगिता आयोजित की गई।जिसमें विद्यार्थियों को अपने घरों पर माँ सरस्वती का पूजन कर ,पूजन करते हुए 1 फ़ोटो जिसमे वे विद्यमान हो प्रेषित करना था।यह प्रतियोगिता स्नातक एवं स्नातकोत्तर दोनों स्तरों पर आयोजित थी। प्रथम 3 सर्वश्रेष्ठ चित्रों को प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार देने का निर्णय लिया गया था। प्रतियोगिता में भाग लेना पूर्णतः विद्यार्थियों की इच्छा पर है। इस प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार कु. आकांक्षा,द्वितीय पुरस्कार श्री हितेश कुमार तथा तृतीय पुरस्कार श्री कृष्ण राम को मिला।

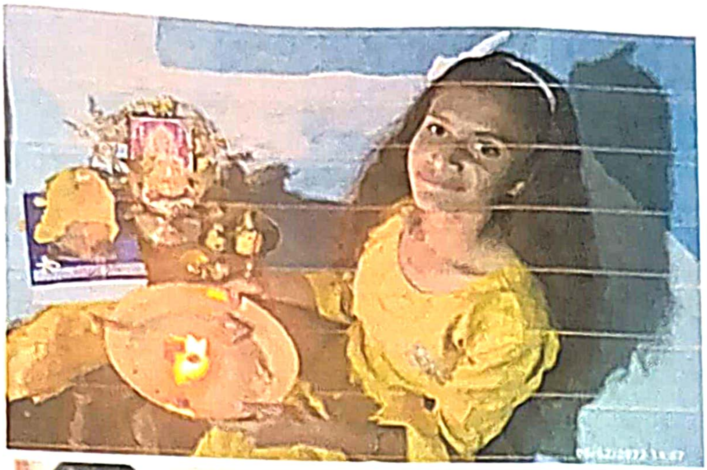

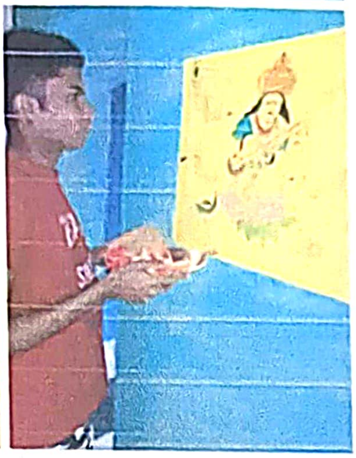

अतिथि व्याख्यान

दिनांक 07.02.2022

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा दिनांक 07.02.2022 को अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया । इस व्याख्यान में प्रमुख वक्ता के रूप में सागर विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के सहा. प्राध्यापक डॉ. नौनिहाल गौतम थे ।

व्याख्यान का विषय संस्कृत शास्त्रों की परंपरा पर आधारित था। उक्त व्याख्यान में वक्ता ने बताया कि संस्कृत वाङ्मय कीबहुत विशाल परंपरा है, जिसमे वैदिक साहित्य से लेकर लौकिक साहित्य तक समृद्ध भंडार है। शास्त्र दो प्रकार के हैं, पौरुषेय तथा अपौरुषेय। वेदों को अपौरुषेय माना गया है, जिसमे चारों वेदों का समावेश है। इसके अतिरिक्त ब्राहमण, आरण्यक और उपनिषद भी वैदिक साहित्य के अंतर्गत आते हैं, जो वेदों के व्याख्या भाग हैं।वेदार्थ को समझने के लिए शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद, ज्योतिष इन छह वेदांगों की रचना की गई है। पौरुषेय शास्त्रों में पुराण, आन्वीक्षिकी, मीमांसा, स्मृति ग्रंथों का नाम आता है।

इन चौदह प्रकार के विद्यास्थानों के अलावा आदिकाव्य रामायण, महाभारत, नाट्यशास्त्र, काव्यशास्त्र, अर्थशास्त्र, नीतिशास्त्र, पाकशास्त्र, सङ्गीतशास्त्र, वास्तुशास्त्र, कामशास्त्र, सामुद्रिकशास्त्र तथा आधुनिक लौकिक काव्य एवं शास्त्रों का विस्तृत प्रतिपादन किया।

कार्यक्रम मे विभाग की अध्यक्षा डॉ. दिव्या देशपांडे, डॉ. ललित प्रधान तथा डॉ.महेंद्र नगपुरे उपस्थित थे।

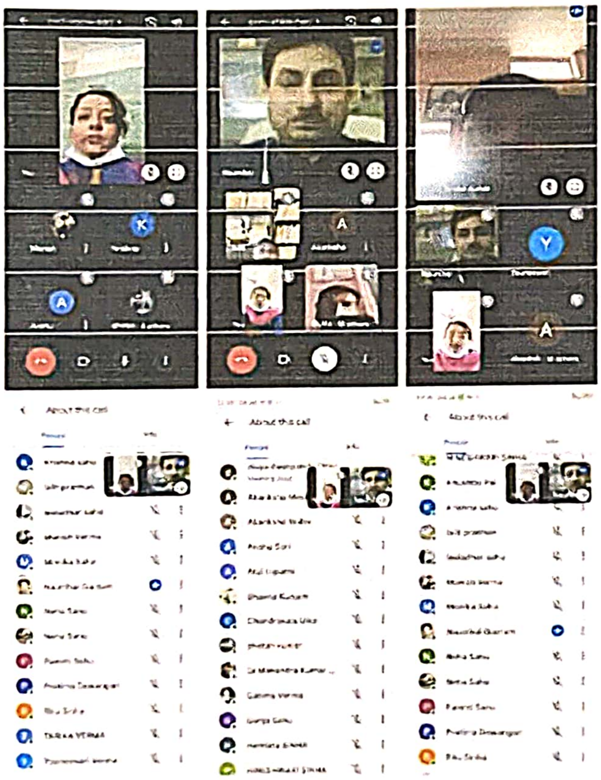

नेटसेट परीक्षा की तैयारी हेतु/ आयोजित दिवसीय कार्यशाला 1

दिनांक19 /02/2022

शासकीय दिग्विजय स्वशासी महाविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा नेट दिवसीय 1 सेट परीक्षा की तैयारी हेतु/ 19 कार्यशाला दिनांक/02/2022 को आयोजित की गयी। इस एकदिवसीय नेट/सेट प्रशिक्षण कार्यशाला में डॉ. अखिलेश कुमार मिश्र, अतिथि व्याख्याता, संस्कृत पालि एवं प्राकृत विभाग,रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय,जबलपुर(म.प्र.) ने online माध्यम गूगल मीट द्वारा नेट/सेट परीक्षाओ हेतु मार्गदर्शन किया। इस अवसर पर प्राचार्य डॉ. के. एल. टांडेकर जी ने इस प्रकार के आयोजनों की प्रशंसा की तथा विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मिलित होने हेतु प्रेरणा दी। डॉ. अखिलेश कुमार मिश्र जी ने संस्कृत विषय से संबंधित नेट – परीक्षाओं के आवेदन पत्र,पाठ्यक्रम,तैयारी की रणनीति,उपयोगी पुस्तकों इत्यादि सभी विषयों पर विस्तृत प्रकाश डाला।साथ ही विद्यार्थियो की समस्याओं का समाधान भी किया। इस कार्यशाला में न केवल दिग्विजय महाविद्यालय अपितु सम्पूर्ण देश से विद्यार्थी सम्मिलित हुए। 58 विद्यार्थियों ने इस कार्यशाला में सहभागिता की। कार्यक्रम मे विभाग की अध्यक्षा डॉ. दिव्या देशपांडे, डॉ. ललित प्रधान तथा डॉ.महेंद्र नगपुरे उपस्थित थे।

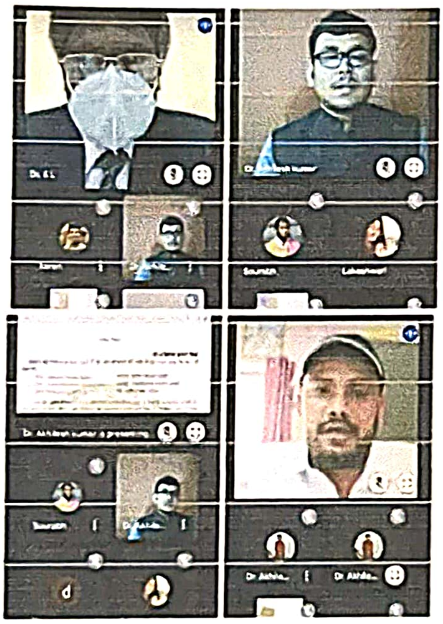

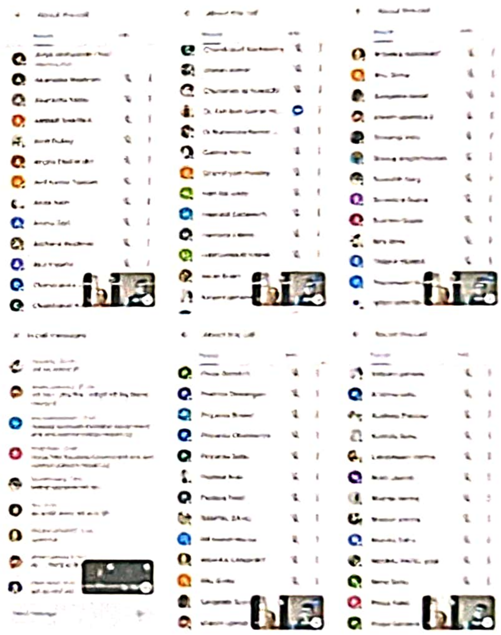

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय,राजनांदगाव(छ.ग)

NET/SET की तैयारी हेतु 1 दिवसीय कार्यशाला

दिनांक-19/02/2022

संरक्षक

डॉ.के. एल. टांडेकर
प्राचार्य
शासकीय दिग्विजय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजनांदगाव (छ.ग.)

मुख्य वक्ता

डॉ. अखिलेश मिश्र
अ.व्याख्याता(संस्कृत),
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय,जबलपुर(म.प्र.)
संस्थापक-
कल्याणी संस्कृत अकादमी,जबलपुर (म. प्र.)

डॉ. दिव्या देशपांडे
संयोजिका
विभागाध्यक्ष(संस्कृत)

डॉ. ललित प्रधान आर्य
आयोजन सचिव
सहा.प्रा.(संस्कृत)

समय -1:00PM
माध्यम-GCIOGLE MEET
LINK- meet.google.com/jvo-hioz-xfx

संस्कृत विभाग में राष्ट्रीय ई-व्याख्यान माला का आयोजन

दिनांक 22/02/2022 से दिनांक 26-02-2022 तक शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय में राष्ट्रीय ई-व्याख्यान माला का आयोजन किया गया जिसमें देश के विभिन्न प्रान्तों के केंद्रीय विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के प्राध्यापकों ने विभिन्न विषयों पर मार्गदर्शन किया।

प्राचार्य डॉ. के. एल. टांडेकर के निर्देशन में आयोजित इस राष्ट्रीय ई-व्याख्यान माला की संयोजिका संस्कृत विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. दिव्या देशपांडे,आयोजन सचिव डॉ. ललित प्रधान आर्य एवं सह सचिव डॉ.महेंद्र नगपुरे थे ।

व्याख्यान माला के प्रथम पुष्प के रूप में **दिनांक** 22/02/2022 को डॉ. राघवेंद्र शर्मा, सहायक प्राध्यापक-साहित्य, शासकीय संस्कृत महाविद्यालय,रायपुर (छ.ग.)ने Online माध्यम गूगल मीट द्वारा **अलङ्कार शास्त्र** विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

व्याख्यान माला के द्वितीय पुष्प के रूप में **दिनांक** 23/02/2022 को डॉ. धनंजयमणि त्रिपाठी, सहायक प्राध्यापक-संस्कृत, जामिया मिल्लिया इस्लामिया केन्द्रीय विश्वविद्यालय,नई दिल्ली ने Online माध्यम गूगल मीट द्वारा **श्रीमद्भगवद्गीता का शैक्षिक निहितार्थ** विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

व्याख्यान माला के तृतीय पुष्प के रूप में **दिनांक** 24/02/2022 को डॉ. नौनिहाल गौतम, सहायक प्राध्यापक-संस्कृत डॉ. हरिसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय,सागर(म.प्र.) ने Online माध्यम गूगल मीट द्वारा **लौकिक छन्द : परिचय एवं व्यावहारिक प्रयोग** विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

व्याख्यान माला के तृतीय पुष्प के रूप में **दिनांक** 25/02/2022 को डॉ. कैलाश शास्त्री,सहायक प्राध्यापक-संस्कृत,सोनपुर महाविद्यालय,सोनपुर (ओड़ीशा) ने Online माध्यम गूगल मीट द्वारा **वर्तमान में संस्कृत की प्रासंगिकता** विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

व्याख्यान माला के तृतीय पुष्प के रूप में **दिनांक** 26/02/2022 को डॉ. संदीप कुमार,सहायक प्राध्यापक-संस्कृत,एन.ए. एस. महाविद्यालय,मेरठ (उ.प्र.) ने **दिनांक** 26/02/2022 को Online माध्यम गूगल मीट द्वारा **शब्दशक्ति विचार** विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

इस राष्ट्रीय ई-व्याख्यान माला में न केवल दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग के स्नातक एवं स्नातकोत्तर के अपितु सम्पूर्ण देश से विभिन्न प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों ने सहभागिता की।

ई-व्याख्यान माला के व्याख्यानों को यूट्यूब के माध्यम से भी लाइव किया गया।सहभागियों से feedback प्राप्तकिए गए एवं उन्हें ई-प्रमाणपत्र भी प्रदान किया गया।

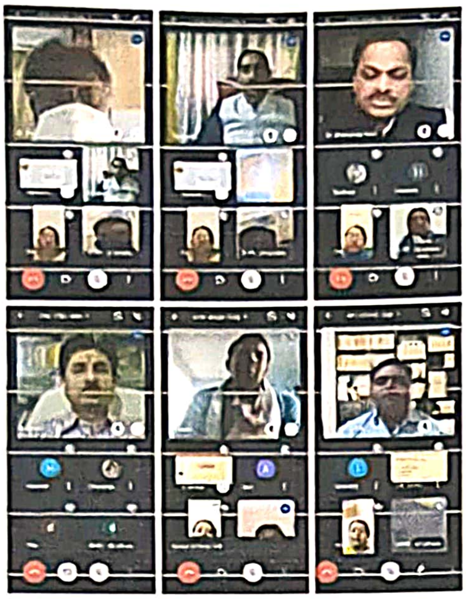

शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर
महाविद्यालय राजनांदगांव (छ.ग.)
राष्ट्रीय ई - व्याख्यान माला
(22-02-2022 से 26-02-2022 तक)
आयोजक
संस्कृत विभाग

संस्कृत विभाग के विद्यार्थियों द्वारा संगीत विश्वविद्यालय का भ्रमण

दिनांक 26/02/2022 को संस्कृत विभाग के 10 विद्यार्थियों एवं 2 प्राध्यापकों ने हिन्दी तथा पत्रकारिता विभाग के विद्यार्थियों एवं विभागीय प्राध्यापकों के साथ विस्तार गतिविधि एवं MOU गतिविधियों के अंतर्गत इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ के साहित्यिक आयोजनो में संयुक्त रुप से शामिल होकर अपना ज्ञानवर्धन किया।

प्राचार्य डॉ. के. एल. टांडेकर के निर्देशन में महाविद्यालय के हिंदी, संस्कृत और पत्रकारिता विभाग के विद्यार्थियों को वहां पूर्व निर्धारित क्लासिकल चर्चा गोष्ठी में भाग लेने के लिए भेजा गया था। इस यात्रा में संस्कृत विभाग से डॉ. दिव्या देशपाण्डेय, महेन्द्र नगपुरे के नेतृत्व में दस विद्यार्थी शामिल हुए ।

सर्वप्रथम संगीत विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में आधुनिक संस्कृतकथासाहित्य पर परिचर्चा का आयोजन किया गया जिसमें में डॉ. दिव्या देशपाण्डे ने संस्कृत के आधुनिक कथा लेखक डॉ. राजेन्द्र मिश्र जी के संस्कृत कथा संग्रह इक्षुगंधा पर विस्तृत प्रकाश डाला तत्पश्चात इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ की संस्कृत विभाग की प्राध्यापिका डॉ. पूर्णिमा केलकर जी ने डॉ.श्रीधर भास्कर वर्नेकर के कथा संग्रह कथावल्लरी की समीक्षा की।अंत में डॉ. महेन्द्र नगपुरे ने आधुनिक कथा साहित्य संस्कृतकथासाहित्य पर समेकित विचार प्रकट किये।प्रदीप त्रिपाठी नामक विद्यार्थी ने हृदयपरिवर्तन नामक कथा की समीक्षा की।अंत में विद्यार्थियों की जिज्ञासा का समाधान किया गया।

परिचर्चा के पश्चात विश्वविद्यालय के नाटक विभाग द्वारा फणीश्वर नाथ रेणु की प्रसिद्ध कहानी 'पंचलाइट' की नाट्य प्रस्तुति दिखाई गई तथा नाट्य विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. योगेंद्र चौबे जी ने विद्यार्थियों को प्राचीन काल से लेकर अद्यावधि पर्यन्त नाट्य विधा के विकास पर मार्गदर्शित किया। उसके बाद विद्यार्थियों को मूर्तिकला, चित्रकला, गायन-वाद, लोकसंगीत तथा नृत्य विभाग में ले जाकर वहां की कला कृतियों की प्रदर्शनी तथा गायन-वादन की प्रस्तुति दिखाई गई।

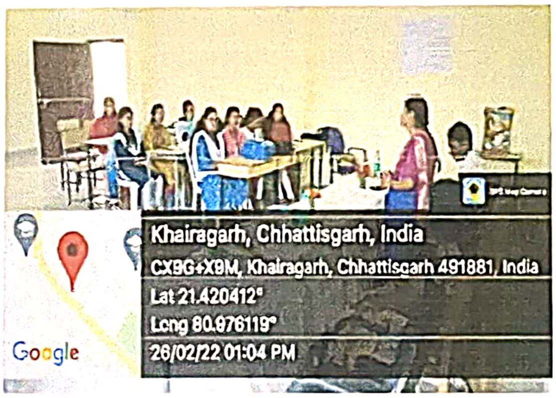

[illegible] के [illegible] विश्वविद्यालय [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

छात्रों ने संगीत विश्वविद्यालय देखा

राजनांदगांव। दिग्विजय महाविद्यालय के 30 विद्यार्थियों ने अपने विभागीय प्राध्यापकों के साथ इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ के साहित्यिक आयोजनों में संयुक्त रूप से शामिल होकर अपना ज्ञानवर्द्धन किया। ये कार्यक्रम दोनों संस्थाओं के साथ हुए एम. ओ. यू. अनुबंध के तहत आयोजित थे।

प्राचार्य डॉ. के. एल. टांडेकर के निर्देशन में महाविद्यालय के हिंदी, संस्कृत और पत्रकारिता विभाग के विद्यार्थियों को वहां पूर्व निर्धारित

कलाकृति के साथ गायन-वादन की प्रस्तुति

क्लासिकल चर्चा गोष्ठी में भाग लेने के लिए भेजा गया था। संगीत विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में महादेवी वर्मा और माधवराव सप्रे पर आधारित साहित्यिक गोष्ठी आयोजित थी, जिसमें स्नातकोत्तर और शोध छात्रों ने भाग लिया। महादेवी के सांस्कृतिक विचार और माधवराव सप्रे के पत्रकारिता दर्शन पर विश्वविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. मृदुला शुक्ल, डॉ. राजन यादव, डॉ. शंकर मुनि राय तथा नीलम तिवारी और अमितेश सोनकर ने अपने विचार प्रकट किये। इसी प्रकार संस्कृत विभाग में संस्कृत काव्य साहित्य और नाटक पर आधारित गोष्ठी में डॉ. पूर्णिमा केलकर, डॉ. दिव्या देशपाण्डे तथा महेन्द्र नागपुरे ने अपने विचार प्रकट किये।

इस आयोजन में विश्वविद्यालय के नाटक विभाग द्वारा फणीश्वर नाथ रेणु की प्रसिद्ध कहानी 'पंचलाइट' की नाट्य प्रस्तुति दिखाई गई। उसके बाद विद्यार्थियों को मूर्तिकला, चित्रकला, गायन-वाद, लोकसंगीत तथा नृत्य विभाग में ले जाकर वहां की कला कृतियों की प्रदर्शनी तथा गायन-वादन की प्रस्तुति दिखाई गई।

<u>संस्कृत सम्भाषण कार्यशाला</u>

दिनांक 4/03/2022 से 11/03/2022

दिनांक 4/03/2022 से 11/03/2022 तक संस्कृत विभाग में प्राचार्य डॉ. के.एल. टांडेकर जी के मार्गदर्शन में संस्कृत सम्भाषण कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन प्राचार्य डॉ. के.एल. टांडेकर जी की अध्यक्षता दिनांक 4/03/2022 को में हुआ। उद्घाटन के अवसर पर सम्भाषण प्रशिक्षक श्री कु. पूजा चौधरी, संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. दिव्या देशपाण्डे, सहायक प्राध्यापक डॉ. ललित प्रधान आर्य तथा अतिथि व्याख्याता डॉ. महेन्द्र नगपुरे उपस्थित थे।

उद्घाटन के पश्चात् निरंतर 07 दिवस संस्कृत सम्भाषण का प्रशिक्षण प्रतिदिन दोपहर 12 बजे से शाम 2.00 बजे तक दिया गया, जिससे न केवल विद्यार्थियों के भाषा कौशल का वर्धन हुआ अपितु उनके संस्कृत शब्द भंडार, आत्मविश्वास, उच्चारण क्षमता का भी विकास हुआ।

संस्कृत सम्भाषण शिविर से लगभग 40 विद्यार्थी लाभान्वित हुये। इस कार्यशाला में सहभागी हुये विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये गये।

GPS Map Camera
Rajnandgaon, Chhattisgarh, India
32RJ+85R, Rajnandgaon, Chhattisgarh 491441, India
Lat 21.090712°
Long 81.030002°
11/03/22 12:20 PM
Google

संस्कृत विभाग
GPS Map Camera
Rajnandgaon, Chhattisgarh, India
32RH+JVG, Rajnandgaon, Chhattisgarh 491441, India
Lat 21.091723°
Long 81.029971°
04/03/22 12:16 PM
Google

मूल्य वर्धित पाठ्यक्रम

12/03/2022 से 20/04/2022 तक

दिनांक 12/03/2022 को संस्कृत विभाग में मूल्य वर्धित पाठ्यक्रम-कर्मकाण्ड तथा संस्कार प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का उद्घाटन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. के. एल. टांडेकर जी ने की। कार्यक्रम का प्रारंभ वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ हुआ। डॉ. के. एल. टांडेकर जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि विश्व की समस्त भाषाओं की जननी संस्कृत भाषा है। अतः भाषाओं के शुद्धोच्चारण एवं ज्ञान की दृष्टि से संस्कृत का ज्ञान आवश्यक है। उन्होनें कहा कि आज इस अवसर पर यह संकल्प ले कि संस्कृत के प्रचार–प्रसार हेतु सतत् प्रयत्नशील रहेगें। संस्कृत की व्यवहारिक एवं व्यवसायिक उपयोगिता बढ़ाने का प्रयत्न किया जाना चाहिए। प्राचार्य जी ने कर्मकाण्ड प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की महत्ता से विद्यार्थियां को अवगत कराया। कार्यक्रम मंच संचालन विभाग के सहायक प्राध्यापक श्री ललित प्रधान आर्य ने संस्कृत भाषा में किया। कार्यक्रम मे विभाग की अध्यक्षा डॉ. दिव्या देशपांडे, गणित विभाग के प्राध्यापक डॉ. के. के. देवांगन तथा विभाग के अतिथि व्याख्याता डॉ.महेंद्र नगपुरे उपस्थित थे।

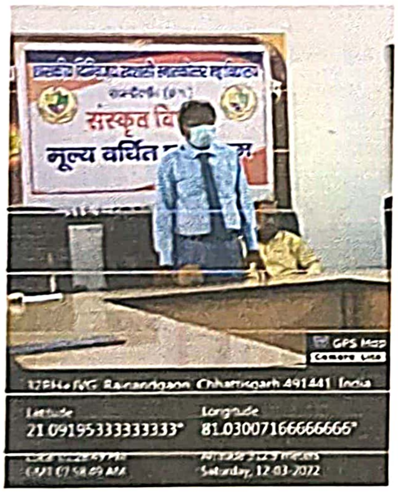

शैक्षणिक –भ्रमण राजिम- चम्पारण (छ.ग.)

दिनांक 15/03/2022

दिनांक 15/03/2022को प्राचार्य डॉ. के एल टांडेकर जी के मार्गदर्शन में स्नातकोत्तर प्रथम एवं तृतीय सेमेस्टर के लगभग 17 विद्यार्थियों द्वारा शैक्षणिक भ्रमण हेतु विभागाध्यक्ष डॉ. दिव्या देशपाण्डे एवं सहायक प्राध्यापक डॉ. ललित प्रधान आर्य जी के साथ भोरमदेव जिला– कबीरधाम (छ.ग.) हेतु प्रस्थान किया गया।

शैक्षणिक भ्रमण हेतु प्रातः 7.00 बजे विद्यार्थियों एवं प्राध्यापकों ने प्रस्थान किया । प्रस्थान से पूर्व महाविद्यालय परिसर स्थित देवालयों में जाकर पूजार्चन किया एवं इस प्रकार मंगलारम्भे की परम्परा का निर्वाह करते हुये प्रातः लगभग 10.00 बजे भोरमदेव स्थित मंदिर परिसर में पदार्पण किया ।

रायपुर से 60 किलोमीटर दूर चम्पारण्य वैष्णव सम्प्रदाय के प्रवर्तक वल्लभाचार्य जी की जन्म स्थली होने के-कारण यह उनके अनुयायियों का प्रमुख दर्शन स्थल है। मंदिर परिसर का भीतरी भाग संगमरमर से मिलकर बना हुआ है जो इस स्था न को और शांतिमय बनाताहै। बाहर से भी मंदिर देखने में बहुत सुंदर लगता है । मंदिर के बाहर रंगीन स्तदम्भल और मेहराबें बनी हुई है। इस मंदिर में प्रतिवर्ष सम्पूर्ण भारत से विभिन्न श्रद्धालु दर्शन करने आते है। यहाँ चम्पकेश्वर महादेव का पुराना मन्दिर है। इस मन्दिर के शिवलिंग के मध्य रेखाएँ हैं। जिससे शिवलिंग तीन भागों में बँट गया है, जो क्रमशः गणेश, पार्वती व स्वयं शिव का प्रतिनिधित्व करते हैं। ।

चम्पारण मन्दिर पहुंचकर विभाग के विद्यार्थियों द्वारा सर्वप्रथम गर्भगृह में जाकर पूजार्चन, वेदपाठ, पाठ किया गया । तत्पश्चात बाहृय मण्डप में आकर अन्य देवी–देवताओं का पूजार्चन एवं स्तोत्र पाठ किया गया । पूजार्चन के पश्चात विभाग के प्राध्यापकों द्वारा मन्दिर के इतिहास, निर्माण शिल्प एवं स्थापत्य कला तथा शिलालेखों से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त की गई ।

चम्पारण में दोपहर भोजन के पश्चात विद्यार्थियों एवं प्राध्यापकों ने राजिम की ओर प्रस्थान किया।दोपहर 2 बजे राजिम पहुँचने पर सर्वप्रथम राजीव लोचन मंदिर में प्रवेश किया।

छत्तीसगढ़ का प्रयाग राजिम रायपुर से 47 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह महानदी के तट पर स्थित है। यहाँ पैरी और सोंढू नदियाँ महानदी में आकर मिलती हैं। माघ पूर्णिमा पर यहाँ प्रतिवर्ष मेला लगता है। जहाँ बड़ी संख्या में धर्मालु पवित्र महानदी में स्नान का पुण्य कमाते हैं। यहाँ भगवान राजीव लोचन का बेहद सुन्दरप्राचीन मन्दिर है। इसके साथ ही मंदिरों के समूह भी हैं। जिनका विशेष धार्मिक महत्व है।

राजीव लोचन मन्दिरके अतिरिक्त यहाँ कुलेश्वर महादेव, राजेश्वर मंदिर, जगन्नाथ मन्दिर, पंचेश्वर महादेव मन्दिर, भूलेश्वर महादेव मन्दिर, नरसिंह मन्दिर, बद्रीनाथ मन्दिर, वामन वराह मन्दिर, राजिम तेलीन का मन्दिर, दानेश्वर मन्दिर, रामचन्द्र मन्दिर, सोमेश्वर महादेव मन्दिर, शीतला मन्दिर प्रमुख दर्शनीय हैं जो अपनी वास्तुकला का परिचय देते है।

प्राचीन कथानुसार राजिम का प्राचीन नाम कमल क्षेत्र या पद्मपुर था,जो इसका संबंध राजीव तेलीन, राजीव लोचन तथा जगपाल से जोड़ता है। कथानुसार राजीव तेलीन के पास काले पत्थर की मूर्ति थी। जगपाल ने राजीव तेलीन को सोना देकर मूर्ति प्राप्त कर राजीव लोचन नामक मन्दिर बनवाया। राजीव लोचन मन्दिर जगन्नाथपुरी जाने वाले तीर्थयात्रियों के रास्ते में आने वाले महत्वपूर्ण मन्दिरों में से एक है।

पूजार्चन के पश्चात मन्दिर के इतिहास एवं प्रस्तर मूर्तियों के विषय में मन्दिर के पुरोहित जी द्वारा भी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई ।तत्पश्चात प्रस्तर मूर्तियों एवं अन्य देवमूर्तियों का निरीक्षण कर तत्कालीन धार्मिक दशाओं से सम्बन्धित जानकारी भी प्राप्त की गयी । अन्त में मन्त्रपाठ के साथ स्वल्पाहार कर शाम लगभग 6.00 बजे वापसी हेतु मधुर स्मृतियों को साथ लेकर प्रस्थान किया गया ।

दिग्विजय कॉलेज में संस्कृत साहित्य परिषद् का गठन

नवभारत रिपोर्टर ◆ राजनांदगांव
www.navbharat.org

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा प्राचार्य डॉ. केएल टांडेकर के मार्गदर्शन एवं उपस्थिति में संस्कृत साहित्य परिषदका गठन एवं गीता जयन्ती कार्यक्रम आयोजित किया गया. संस्कृत साहित्य परिषद के अध्यक्ष के रूप में कु. अंगिता, उपाध्यक्ष कुअंकिता एसचिव कु. दुलारी तथा सहसचिव के रूप में कु. युनेश्वरी का मनोनयन प्रावीण्यता सूची के आधार पर किया गया. कार्यक्रम का प्रारंभ वैदिक मंत्रोच्चारण, दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना के साथ हुआ. इस अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा संस्कृत भाषा में स्वागत गीत एवं मधुराष्टकम्की प्रस्तुति की गयी. विभाग के प्राध्यापक डॉ. ललित प्रधान आर्य ने अपने प्रास्ताविक उद्बोधन में गीता जयन्ती को मनाने के उद्देश्य एवं गीता की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला. प्राचार्य ने अपने उद्बोधन मे संस्कृत के व्यावहारिक उपयोग एवं रोजगार की संभावनाओं पर प्रकाश डाला.

दिग्विजय में भूतपूर्व छात्र सम्मेलन हुआ

राजनांदगांव। शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. केएल टांडेकर के निर्देशानुसार 28 दिसंबर को संस्कृति विभाग में विभागाध्यक्ष डॉ. दिव्या देशपांडे एवं विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. ललित प्रधान आर्य की उपस्थिति में भूतपूर्व छात्र सम्मेलन आयोजित किया गया। इस अवसर पर विभाग के भूतपूर्व छात्र-छात्राएं उपस्थित थे। विभागाध्यक्ष डॉ. दिव्या देशपांडे ने सम्मेलन में उपस्थित भूतपूर्व छात्र-छात्राओं के बीच अपने विचार रखे। भूतपूर्व छात्रों द्वारा फीडबैक प्रपत्र भरकर फीडबैक प्रदान किया गया।

दिग्विजय कॉलेज में व्याख्यान

राजनांदगांव. प्राचार्य डॉ के एल टांडेकर के निर्देशानुसार आज दिग्विजय महाविद्यालय के हिंदी विभाग में अंतर्विषयक व्याख्यान आयोजित किया गया. इसमे संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ दिव्या देशपांडे ने विषय विशेषज्ञ के रूप मे भाषा की परिवर्तनशीलता पर भाषा वैज्ञानिक रीति से व्याख्यान दिया आपने बताया कि भाषा की स्वाभाविक प्रकृति परिवर्तनशील है. यह समय के साथ अपना शाब्दिक अर्थ बदलती रहती है. भाषा विज्ञान मे इसे अर्थपरिवर्तन की दिशाएं कहा जाता है. आपने आगे सोदाहरण समझाया कि किस प्रकार शब्दों का अर्थ संकुचन और अर्थविस्तार होता है. उल्लेखनीय है कि इस तरह का भाषिक बदलाव सभी भाषाओं मे होता है. प्राचार्य और विभागीय प्राध्यापकों की उपस्थिति मे संपन्न इस आयोजन मे स्नातकोत्तर हिंदी विषय के सभी विद्यार्थी शामिल थे. इस अवसर पर प्राचार्य डॉ टाण्डेकर ने कहा कि अंतर्विभागीय व्याख्यान का उद्देश्य है विद्यार्थियों में अंतर्विषयक समझदारी विकसित करना.

संस्कृत विभाग मे अतिथि व्याख्यान आयोजित

राजनांदगांव. शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा 7 फरवरी को अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया. इस व्याख्यान में प्रमुख वक्ता के रूप में सागर विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के सह. प्राध्यापक डॉ. नौनिहाल गौतम थे. व्याख्यान का विषय संस्कृत शास्त्रों की परंपरा पर आधारित था. उक्त व्याख्यान में वक्ता ने बताया कि संस्कृत वाङ्मय की बहुत विशाल परंपरा है, जिसमे वैदिक साहित्य से लेकर लौकिक साहित्य तक समृद्ध भंडार है. शास्त्र दो प्रकार के हैं, पौरुषेय तथा अपौरुषेय. वेदों को अपौरुषेय माना गया है, जिसमे चारों वेदों का समावेश है. इसके अतिरिक्त ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद भी वैदिक साहित्य के अंतर्गत आते हैं, जो वेदों के व्याख्या भाग है. वेदार्थ को समझने के लिए शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद, 'ज्योतिष इन छह वेदांगों की रचना की गई है. पौरुषेय शास्त्रों में पुराण, आन्वीक्षिकी, मीमांसा, स्मृति ग्रंथों का नाम आता है.

दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग मे भूतपूर्व छात्र सम्मेलन

राजनांदगांव. दिग्विजय कॉलेज के प्राचार्य डॉ. के.एल. टांडेकर के निर्देशानुसार 28 दिसम्बर को संस्कृत विभाग में विभागाध्यक्ष डॉ. दिव्या देशपांडे एवं विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. ललित प्रधान आर्य की उपस्थिति में भूतपूर्व छात्र सम्मेलन आयोजित किया गया. इस अवसर पर विभाग के भूतपूर्व छात्र-छात्रा उपस्थित रहे. कार्यक्रम का प्रारंभ वैदिक मंत्रोच्चारण, दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना के साथ हुआ. विभागाध्यक्ष डॉ. दिव्या देशपाण्डे ने सम्मेलन में उपस्थित सभी भूतपूर्व छात्र-छात्राओं वर्तमान में विभाग में अध्ययन का स्तर, महाविद्यालय में विद्यार्थियों के लिये उपलब्ध सुविधाओं आदि विषयों पर जानकारी दी. भूतपूर्व छात्रों द्वारा भी महाविद्यालय एवं विभाग की उत्तरोत्तर प्रगति पर संतुष्टि व्यक्त की गयी.

दिग्विजय महाविद्यालय संस्कृत विभाग ने अंतर्विषयक व्याख्यान का आयोजन

नवभारत रिपोर्ट ◆ राजनांदगांव.
www.navbharat.org

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव के प्राचार्य डॉ. के.एल टांडेकर के निर्देशानुसार संस्कृत विभाग द्वारा अंतर्विषयक व्याख्यान आयोजित किया गया, जिसमें महाविद्यालय के दर्शनशास्त्र एवं योग विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. एच एस अलंरजा ने भारतीय आस्तिक दर्शन विषय पर स्नातकोत्तर के विद्यार्थियों को मार्गदर्शित किया. कार्यक्रम का प्रारंभ वैदिक मंत्रोच्चारण, दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना एवं मुख्य वक्ता डॉ. एच.एस. अलंरजा के स्वागत के साथ हुआ. तत्पश्चात डॉ. अलंरजा ने समस्त षड आस्तिक दर्शनों के प्रमुख तथ्यों पर सारगर्भित व्याख्यान दिया. कार्यक्रम का संचालन विभागाध्यक्ष डॉ. दिव्या देशपांडे द्वारा एवं आभार प्रदर्शन अतिथि व्याख्याता स्वामी संवर्धक शर्मा द्वारा किया. इस अवसर पर विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. ललित प्रधान आर्य एवं सभी स्नातकोत्तर संस्कृत के विद्यार्थी उपस्थित थे. शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया.

संस्कृत विभाग में अंतर्विभागीय व्याख्यान का आयोजन

राजनांदगांव। दिग्विजय महाविद्यालय संस्कृत विभाग द्वारा आज अंतर्विभागीय व्याख्यान आयोजित किया गया। जिसमें भूगोल विभाग के सहायक प्राध्यापक सुवेन्द्र जेनामनी ने मानव भूगोल एवं आध्यात्मिक भूगोल इस विषय पर अपना व्याख्यान दिया। श्री जेनामनी द्वारा भारत के आध्यात्मिक क्षेत्रों,उन क्षेत्रों की भौगोलिक परिस्थितियों के विषय में सविस्तृत जानकारी दी गयी। इस कार्यक्रम का संचालन संस्कृत विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ दिव्या देशपाण्डे ने किया तथा आभार प्रदर्शन डॉ ललित प्रधान आर्य द्वारा किया गया। इस अवसर पर विभाग के अतिथि व्याख्याता डॉ महेंद्र नगपुरे एवं स्नातक एवं स्नातकोत्तर के विद्यार्थी उपस्थित थे।

गुरुवार, 30 दिसंबर, 2021 | 10

दिग्विजय कॉलेज में पूर्व छात्रों का हुआ सम्मेलन

राजनांदगांव । शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय में 28 दिसंबर को संस्कृत विभाग में विभागाध्यक्ष डॉ. दिव्या देशपांडे एवं विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. ललित प्रधान आर्य की उपस्थिति में भूतपूर्व छात्र सम्मेलन आयोजित किया गया। इस अवसर पर विभाग के भूतपूर्व छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे। कार्यक्रम का प्रारंभ वैदिक मंत्रोच्चारण, दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना के साथ हुआ। विभागाध्यक्ष डॉ. दिव्या ने सम्मेलन में उपस्थित सभी भूतपूर्व छात्र-छात्राओं को वर्तमान में विभाग में अध्ययन का स्तर, महाविद्यालय में विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध सुविधाओं आदि विषयों पर जानकारी दी। भूतपूर्व छात्रों द्वारा भी महाविद्यालय एवं विभाग की उपलब्धि प्रगति पर संतुष्टि व्यक्त की। भूतपूर्व छात्रों ने प्रपत्र भरकर फीडबैक प्रदान किया।

संस्कृत विभाग में अंतर्विभागीय व्याख्यान आयोजित

राजनांदगांव। शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. के.एल. टांडेकर के मार्गदर्शन में संस्कृत विभाग, विभागाध्यक्ष डॉ. दिव्या देशपांडे के निर्देशन में संप्रेषण कला एवं प्रिंट मीडिया का परिदृश्य विषय में अंतर्विभागीय व्याख्यान आयोजित किया गया। मुख्य वक्ता के रूप में पत्रकारिता विभाग के प्राध्यापक अमितेश सोनकर उपस्थित थे। कार्यक्रम के शुरुआत सरस्वती वंदना कर किया गया।

मुख्य वक्ता श्री सोनकर ने संप्रेषण कला की महत्ता, पत्रकार के गुण एवं संस्कृत में पत्रकारिता के अवसरों के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि वर्तमान समय में सोशल मीडिया के चलते हर एक विद्यार्थी एवं भारत के सभी नागरिक अपने आप में एक पत्रकार हैं पत्रकार किसी पर्टिकुलर पत्रकारिता विषय से नहीं बल्कि सभी विषय की विद्यार्थियों के लिए इस क्षेत्र में आने के लिए अवसर प्रदान करता है। इसके लिए लेखन शैली के साथ हर एक विषय के बारे में जानकारी रखना आवश्यक है, एक पत्रकार को निष्पक्षता, रोचकता, सरलता, प्रभावशाली जैसे मुख्य तत्वों पर विशेष ध्यान देकर कार्य किया जा सकता है। इस कार्यक्रम का संचालन संस्कृत विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. ललित प्रधान आर्य तथा आभार प्रदर्शन डॉ. महेंद्र नागपुरे द्वारा किया गया। इस अवसर पर विभाग के स्नातकोत्तर के विद्यार्थी उपस्थित थे।

फास्ट फारवर्ड

दिग्विजय कॉलेज में अंतर्विभागीय व्याख्यान का आयोजन

राजनांदगांव. महाविद्यालय के प्राचार्य केएल टांडेकर के मार्गदर्शन में संस्कृत विभाग द्वारा अंतर्विभागीय व्याख्यान आयोजित किया गया, जिसमें अंग्रेजी विभाग की सहायक प्राध्यापक डॉ. अनिता साहा द्वारा इस विषय पर अपना व्याख्यान दिया गया. यह कार्यक्रम गूगल मीट के माध्यम से आयोजित किया गया. कार्यक्रम में प्राचार्य महोदय द्वारा कहा गया विभागों को सतत इस तरह के आयोजन किये जाने चाहिए, जिससे विद्यार्थी लाभान्वित हों. डॉ अनिता साहा द्वारा न केवल स्वयं तथा अन्य पाठ्यक्रमों के विषय में अपितु संस्कृत विषय हेतु भी राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों में चलाए जा रहे ऑनलाइन पाठ्यक्रमों की सविस्तृत जानकारी दी गयी. इस कार्यक्रम का संचालन संस्कृत विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. दिव्या देशपांडे ने किया तथा आभार प्रदर्शन डॉ ललित प्रधान आर्य द्वारा किया गया. इस अवसर पर विभाग के अतिथि व्याख्याता डॉ महेंद्र नागपुरे एवं स्नातक एवं स्नातकोत्तर के विद्यार्थी उपस्थित थे.

संस्कृत विभाग में अंतर्विभागीय व्याख्यान

राजनांदगांव। दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा अंतर्विभागीय व्याख्यान आयोजित किया गया। इसमें अंग्रेजी विभाग की सहायक प्राध्यापक डॉ. अनिता साहा द्वारा सबंधित विषय पर अपना व्याख्यान दिया गया। यह कार्यक्रम गूगल मिट के माध्यम से आयोजित किया गया। कार्यक्रम में प्राचार्य ने कहा कि विभाग को सतत इस तरह के आयोजन किए जाने चाहिए। जिनसे विद्यार्थी लाभान्वित हो। डॉ. अनिता साहा द्वारा न केवल स्वयं तथा अन्य पाठ्यक्रमों के विषय में अपितु संस्कृत विषय हेतु भी राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों में चलाए जा रहे ऑनलाइन पाठ्यक्रमों की सविस्तृत जानकारी दी गयी। कार्यक्रम का संचालन संस्कृत विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. दिव्या देशपांडे तथा आभार प्रदर्शन डॉ. ललित प्रधान आर्य द्वारा किया गया। इस अवसर पर विभाग के अतिथि व्याख्याता डॉ. महेंद्र नागपुरे एवं स्नातक एवं स्नातकोत्तर के विद्यार्थी उपस्थित थे।

संस्कृत विभाग में अंतर्विभागीय व्याख्यान

राजनांदगांव (दावा)। दिग्विजय कॉलेज के प्राचार्य डॉ. के.एल. टांडेकर के मार्गदर्शन में संस्कृत विभाग द्वारा अंतर्विभागीय व्याख्यान आयोजित किया गया। जिसमें अंग्रेजी विभाग की सहायक प्राध्यापक डॉ. अनिता साहा द्वारा भारत सरकार द्वारा प्रमाण पत्र के साथ मुफ्त ऑनलाइन पाठ्यक्रम इस विषय पर अपना व्याख्यान दिया गया। यह कार्यक्रम 'स्वयं' के माध्यम से आयोजित किया गया। कार्यक्रम में प्राचार्य द्वारा कहा गया कि विभाग को सतत इस तरह के आयोजन किये जाने चाहिए जिससे विद्यार्थी लाभान्वित हो। डॉ. अनिता साहा द्वारा न केवल 'स्वयं' तथा अन्य पाठ्यक्रमों के विषय में अपितु संस्कृत विषय हेतु भी राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों में चलाए जा रहे स्वयं के पाठ्यक्रमों की सविस्तृत जानकारी दी गयी। इस अवसर पर विभाग के अतिथि व्याख्याता डॉ. महेंद्र नागपुरे एवं स्नातक एवं स्नातकोत्तर के विद्यार्थी उपस्थित थे।

अतिथि व्याख्यान आयोजित

राजनांदगांव। शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस व्याख्यान में प्रमुख वक्ता के रूप में सागर विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के सहा. प्राध्यापक डॉ. नौनिहाल गौतम थे। उक्त व्याख्यान में वक्ता ने बताया कि संस्कृत वाङ्मय की बहुत विशाल परंपरा है, जिसमें वैदिक साहित्य से लेकर लौकिक साहित्य तक समृद्ध भंडार है। कार्यक्रम में विभाग की अध्यक्षा डॉ. दिव्या देशपांडे, डॉ. ललित प्रधान तथा डॉ. महेन्द्र नगपुरे उपस्थित थे।

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय में संस्कृत साहित्य परिषद् का गठन एवं गीता जयंती कार्यक्रम संपन्न

राजनांदगांव (दावा)। शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा प्राचार्य डॉ. के.एल.टांडेकर के मार्गदर्शन एवं उपस्थिति में संस्कृत साहित्य परिषद्‌का गठन एवं गीता जयन्ती कार्यक्रम आयोजित किया गया। संस्कृत साहित्य परिषद के अध्यक्ष के रूप में कु. अंकिता, उपाध्यक्ष कु.अंकिता, सचिव कु. दुलारी तथा सहसचिव के रूप में कु.पुनेश्वरी का मनोनयन प्रावीण्यता सूची के आधार पर किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ वैदिक मंत्रोच्चारण, दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना के साथ हुआ। इस अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा संस्कृत भाषा में स्वागत गीत एवं मधुराष्टकम्‌की प्रस्तुति की गयी। विभाग के प्राध्यापक डॉ. ललित प्रधान आर्य ने अपने प्रास्ताविक उद्बोधन में गीता जयन्ती को मनाने के उद्देश्य एवं गीता की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। प्राचार्य डॉ. के.एल. टांडेकर ने अपने उद्बोधन में संस्कृत के व्यावहारिक उपयोग एवं रोजगार की संभावनाओं पर प्रकाश डाला तथा तत्पश्चात संस्कृत साहित्य परिषद के मनोनीत पदाधिकारियों के नामों की घोषणाकर शुभकामनाएं देते हुए उन्हें उनके कर्तव्यों से अवगत कराया। कार्यक्रम का संचालन विभागाध्यक्ष डॉ. दिव्या देशपाण्डे द्वारा एवं आभार प्रदर्शन श्री ललित प्रधान आर्य द्वारा किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम संस्कृत भाषा में ही संपन्न हुआ। इस अवसर पर विभाग के अतिथि व्याख्याता श्री स्वामी सवर्द्धक शर्मा एवं सभी स्नातक स्नातकोत्तर के विद्यार्थी उपस्थित थे। शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।